PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE 3

'मानवीनी भवाई' : मानव - जीवन का महाकाव्य

डॉ. भरत ए. पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज,
विजयनगर, जि. साबरकांठा
गुजरात भारत

श्री पन्नालाल पटेल गुजराती भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार हैं | वे गुजराती के मँजे हुए और सशक्त कथाकार हैं | उन्हों ने ५५ से अधिक उपन्यास (नवलकथा) लिखे हैं और लगभग २६ कहानी-संग्रह (टूंकी वार्ता, नवलिका) प्रकाशित हो चुके हैं | एकांकी, नाटक, बाल-साहित्य पर भी उन्हों ने सफलतापूर्वक अपनी कलम चलाई है | ' वलामणा ' (१९४०), ' मलेला जीव ' (१९४१), ' मानवीनी भवाई ' (१९४७), ' भाग्याना भेरु ' (१९५७) उनकी श्रेष्ठ नवलकथाएँ (उपन्यास) हैं | उनके समस्त साहित्य-सर्जन के लिए, विशेषत: ' मानवीनी भवाई ' के लिए सन् १९८५ में देश के सर्वोत्तम साहित्यिक पुरस्कार ' भारतीय ज्ञानपीठ ' से सम्मानित किया गया |

' मानवीनी भवाई ' श्री पन्नालाल पटेल का श्रेष्ठ सर्जन कहा जा सकता है | इस उपन्यास (नवलकथा) में लेखक ने स्वतन्त्रता से पहले के भारत के उत्तर गुजरात के राजस्थान के सीमावर्ती अंचल के ग्रामीण जीवन को जीवंत कर दिखाया है | एक गाँव विशेष के पटेल समाज के रीति-रिवाज, उनके सुख-दु:ख, ईर्ष्या-बैर, सगाई-विवाह, खेती के विभिन्न कार्य और उनमें पनपती कालु-राजु की प्रेम-कथा तथा विक्रम संवत १९५६ में पड़े भयंकर अकाल से जूझते मानवों के कंकाल, मुट्ठीभर अनाज में अस्मत लूटवाती स्त्रियों की विवशता आदि घटनाओं का जीवंत और मार्मिक चित्रण इस रचना को सशक्त बनाता है | विक्रम

संवत १९५६ और उससे पहले के लगभग २५ वर्षों का काल-खंड इस उपन्यास की कथावस्तु की समयावधि है | सर्वप्रथम हम इस उपन्यास के शीर्षक ' मानवीनी भवाई ' का अर्थ समझ लेते हैं | भवाई का अर्थ होता है - गुजरात के गाँवों में त्रागाला या नायक जाति के पुरुषों द्वारा खेले जानेवाले नाटक, जो मूल में असाइत ठाकर द्वारा लिखे गए हैं | इस संदर्भ में देखे तो मनुष्य का जीवन भी नाटक जैसा ही है, जिसमें उसे ईश्वर द्वारा दिये गए पात्र का अभिनय करना पड़ता है | इसीलिए कहा जाता है कि जीवन एक रंगमंच है और हम सब इसके पात्र हैं | श्री पन्नालाल पटेल ने इस उपन्यास के निवेदन में ' भवाई ' के दूसरे अर्थ की ओर भी इंगित किया है - ' मानवीनी भवाई ' नो वाच्यार्थ तो छे ज | उपरांत ' भवाई ' एटले मिलकत एवो अर्थ पण थाय छे | दा. त. बे ढोरा ने बे छोरा, ए आपणी भवाई | आ सिवाय ' खेती ए तो भाई मानवीनी भवाई छे - आम पण बोलाय छे | ' [१] इसके अनुसार ' भवाई ' का दूसरा अर्थ होता है - दो मवेशी (गाय-भैंस-बैल) और दो बच्चे ही किसान की मिल्कत होती है | किसान पूरी जिंदगी खेती करके अपनी इस मिल्कत को संभालने में अपनी जान खपाता रहता है | इस उपन्यास को पढ़ते समय ये दोनों अर्थ बिल्कुल सही लगते हैं | गुजरात के कृषक-जीवन को उसकी अच्छाइयो-बुराइयों, रीति-रिवाजों, लोभ-ईर्ष्या, प्रेम-द्वेष जैसे मनोभावों, कुदरती आपत्तियों, पेट की भूख और भीख न माँगने की टेक (प्रतिज्ञा), कालु-राजु की प्रणय-कथा, माली और नानो जैसे खल-पात्रों की यथार्थता आदि का संवेदनशील और मार्मिक चित्रण इस उपन्यास को महाकाव्यत्व की गरिमा तक पहुँचाता है |

विक्रम संवत १९५६ (सन् १९००)में पड़े अकाल को छप्पनियों अकाल (दुकाल) के नाम से आज भी याद किया जाता है | इस से लगभग पच्चीस वर्ष पहले के गर्मी के एक दिन की शाम के समय से इस उपन्यास की कथा आरंभ होती है | साठ साल के वालाभाई पटेल के घर पुत्र का जन्म होता है | पुत्र प्राप्ति के लिए उन्हों ने दो पत्नियाँ की थी | छः बच्चों का जन्म हुआ था, पर एक भी जिंदा नहीं बचा था | दो पत्नियों के साथ रहते वालाभाई की जिंदगी नर्क समान हो गई थी, अच्छा हुआ कि एक कुछ साल पहले मर गई थी | इस बार पुत्र के जन्म से बेहद खुश यह बूढ़ा भगवान से इस बच्चे की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करता है | उनकी ईच्छा थी कि किसी पुराणी ब्राह्मण से अपने पुत्र की जन्म-कुंडली बनवाई जाए | एकबार उनके छोटे भाई परमाभाई पटेल (मुखी) की पत्नी से

अपमानित हुए एक पुराणी ब्राह्मण को अपने घर ले आते हैं | ब्राह्मण ने उस बच्चे की जन्म-कुंडली बनाई | बूढ़े की चौपाल में गाँव के लोग इकट्ठा हो गए थे | ब्राह्मण ने बच्चे का नाम राशि के अनुसार सूचित किया, पिता ने अपने बेटे का नाम कालु रखा | ब्राह्मण ने भविष्य-कथन करते हुए कहा कि बच्चा आपकर्मी और बहादुर होगा | घर के आँगन में घोडा बाँधेगा और समाज-ज्ञाति में नाम रोशन करेगा | बूढ़ा बाप और गाँववाले तो खुश थे, पर बूढ़े का छोटा भाई परमा और उसकी पत्नी माली और बेटे ईर्ष्यावश कटु बातें कहकर बूढ़े की गरीबी पर व्यंग्य करते हैं | माली में नीम के पेड़ पर चढ़ी करेली से भी ज्यादा कड़वाहट है | लेखक ने यहाँ पारिवारिक कलह और ईर्ष्या का जीवंत और वास्तविक चित्रण किया है |

उस जमाने में बच्चों के जन्म के साथ ही उनकी सगाई कर दी जाती थी | कालु दो महीने का हो गया था, फिर भी उसकी सगाई नहीं हो पाई थी | माँ-बाप चिंतामग्न थे | सगाई न हो पाने के दो कारण थे - एक तो उसके चाचा परमा मुखी के परिवार का ईर्ष्या-बैर तथा दूसरा कारण था उसके पिता की गरीबी | फूलीमा बूढ़ी औरत थी जो गाँव की स्त्रियों की प्रसूति करवाती (दाई) थी और इतनी समझदार थी कि उसकी बात कोई नहीं टाल सकता था | वालाभाई के घर से फूलीमा को पहले से ही लगाव था | उन्हों ने मन ही मन ठान लिया था कि मैं कालु की सगाई करवा के ही रहूँगी, फिर भले ही परमा और माली का परिवार ईर्ष्या में जल जाए | उसी समय उनके भतीजे की पत्नी ने बच्ची को जन्म दिया | प्रसूति उन्हीं ने करवाई थी | अत: देर किए बिना बेटी की माँ से कह दिया कि तेरी बेटी की सगाई वालाभाई के बेटे कालु से हो गई ऐसा ही समझ | कालु की माँ उसकी सखी थी और फूलीमा की बात वह टाल नहीं सकती थी | उसने बात स्वीकार कर ली | कुछ ही समय में कालु और राजु की सगाई हो गई | इस समाचार ने परमा मुखी के घर में मानो आग लगा दी | माली अपने पति और बेटे-बहुओं को गालियाँ सुनाने लगी |

कालु की सगाई हो जाने पर साठ साल के हो गए वालाकाका पर जिम्मेदारियों के साथ चिंताएँ भी बढ गई | उनके खेत में एक बार सर्दियों के दिन में वालाकाका, कालु का ससुर गलशा, फूलीमा का बेटा शंकर, वेचात आदि सात -आठ लोग बैठकर गेहूं का पौंक खा रहे थे | वालाकाका की बढ़ती जिम्मेदारियों और चिंताओं की बात निकली तो इस में से बावानी लंगोटी की बात निकली | वालाकाका ने ‘ बावानी लंगोटी ’ की कहानी सुनाई |

लंगोटी को चूहों से बचाने के चक्कर में बावा महाराज बिल्ली के बच्चे, गाय और कामवाली बाई आदि की माया में फँस जाता है और फिर मंदिर छोड़कर भाग जाता है | कहानी पूरी कर लेने के पश्चात् वालाकाका ने टिप्पणी करते हुए कहा - " एम छे त्यारे संसारनी वात | बापड़ा बावाना शां गजां के दु:खना दलना दली खाय ? ए तो भलो सर्ज्यो छे भगवाने खेडूत के - आटआटला मारे - अरे आपणे बधाँयने दु:ख छे पण जोजो तमे, एक पछी एक दली ज खावाना | " [२] अर्थात् साधु का सामर्थ्य नहीं कि इतने दु:खों को सहन कर सके | एक किसान ही ऐसा है कि वह प्राकृतिक आपदाओं को झेलते हुए, सर्दी-गर्मी-बारिश में अपने शरीर को मिटाते हुए फसल तैयार करता है, सामाजिक दु:खों को सहन करता है, राज का लगान, साधु-ब्राह्मणों को दान, बारोट, नट, नायक, तूरी, मदारी आदि लोगों को अनाज का दान करना तथा सेठ-साहूकारों का कर्ज चुकाने में घी और गेहूँ जैसा अच्छा अनाज दे देना और खुद के खाने के लिए कोदरा, मकाई जैसा मोटा अनाज रखकर भी संतुष्ट रह लेना और किसी के बस की बात नहीं है | कालु जब सात साल का हुआ , तब उसका बूढ़ा बाप मृत्यु-शैया पर जा गिरा | सगे-संबंधियों से घर भर गया था, बूढ़े बाप का अंतिम समय आ गया था | उन्हों ने अपने छोटे भाई परमा को याद किया | लोकलाज के कारण वहाँ आकर बैठा परमा अपने बड़े भाई के पास जा बैठा | बूढ़े ने परमा से कहा, मैं अपना बेटा किसे सौंपू ? उसका ससुर गलशा तो मुझ से पहले चल बसे | एक तेरे सिवा कौन है इसका ? बड़े भाई के शब्द सुनकर परमा का हृदय-परिवर्तन होने लगा | बूढ़े ने आग्रह करके कालु से परमा को काका कहकर संबोधित करवाया | परमा के आँसुओं ने उसके हृदय की कालिमा को धो दिया था | काका सम्बोधन सुनते ही भावावेश में उसने कालु को उठाकर अपनी गोद में बिठा लिया | इस सुखद दृश्य को देखकर बूढ़े बाप की आत्मा संतुष्ट होकर स्वर्ग की ओर चल पड़ी | परमा मुखी ने कालु को साथ रखकर भाई का कारज किया, पूरी नात को खाना खिलाया |

बरसात के दिनों में अनाज की बुवाई शुरू हो जाती है, पर कालु के बाप का तो देहांत हो गया था, हल कौन चलाये, यह समस्या खड़ी हो गई | शंकर, वेचात, कासम घांची आदि ने उनके खेत बोने के बाद बुआई कर जाने की बात कही थी, पर माली के व्यंग्य-टोनों से क्रोधित कालु की माँ ने सात-आठ वर्ष के कालु को बैलों की रस्सी पकड़ा दी और खुद मकाई के बीज बोने लगी | गाँव में अफवाह फैल गई कि कालु की माँ ने हल की मूठ पकड़ी है |

गाँव का किसान-वर्ग आनेवाली अनजानी आफत से आशंकित और भयभीत होकर कालु की माँ रूपा को दण्ड देने की तैयारी करता है | बूढ़ी रूपा कहती है कि मेहनत करने में कैसी शर्म ! कुछ लोग इसकी बात से सहमत होते है, पर परमा मुखी के घरवाले विरोध करते हैं | आसपास के गांवों से भी समाचार आते हैं कि औरत ने हल की मूठ पकड़ी है, बारिश नहीं आई तो फिर ठीक नहीं रहेगा | काफी दिनों से बारिश बंद हो गई थी | लोग रूपामा के इस पाप को इसकी वजह बताते हैं | सारा गाँव इक्कठा होकर बैल जोतकर रूपामा के ऊपर से समार या डांड चलाने की तैयारी करते हैं | इसी समय बरसात शुरू हो जाती है | लोग रूपामा में दैवी शक्ति है, ऐसा मानकर उनसे माफी माँगते हैं |

कालु की माँ अब घर और पालतू मवेशियों का काम नहीं सँभाल सकती थी | अत: कालु का विवाह कर देने की बात चलती है | परमा मुखी को अब घर में कोई मानता नहीं है | माली के कहने पर बड़ा बेटा रणछोड़ खुद सारे निर्णय लेने लगा है | माली कालु का विवाह तुडवाकर राजु को अपने छोटे बेटे नाना के साथ दूसरा विवाह करवाना चाहती है | वह अपने बेटे रणछोड़ को इस षड्यंत्र को चुपचाप पूरा करने के लिए उकसाती है | परमा मुखी अपने रिश्तेदारों के यहाँ मेहमान बने हुए थे | इस का लाभ उठाकर रणछोड़ समाज के मुखिया पेथा पटेल के घर जाकर काफी रुपया खिलाकर कालु-राजु का विवाह तुड़वा देता है | पेथा पटेल राजनीतिक दावपेंच चलाकर कालु का विवाह दूसरे गाँव के जगाभाई नरसीभाई पटेल की बेटी के साथ और राजु का विवाह जगा पटेल के भाई के साथ तय कर देते हैं | काफी रुपये लुटाकर भी माली की राजु को अपनी बहू बनाने की ईच्छा अधूरी ही रह गई | सारे समाज को पता चल जाता है कि कालु-राजु के इतने पुराने सम्बन्ध को कालु की ही सगी चाची माली और बड़े भाई रणछोड़ ने तुड़वाया है | लोग थूँ थूँ करने लगे | कालु और राजु इतने समय से अपने को पति-पत्नी ही समझ रहे थे | दोनों एक-दूसरे को चाहते थे | उनके हृदय पर कुठाराघात होता है | समाज के निर्णय को न चाहते हुए भी स्वीकार कर विवाह करना पड़ता है | कुछ समय बाद रूपामा की मृत्यु हो जाती है | कालु उसकी नई पत्नी भली के साथ पति जैसा व्यवहार नहीं कर पा रहा था | इसीलिए मरते समय रूपामा ने अपने बेटे राजु से वचन ले लिया कि एक के रहते वह दूसरा विवाह नहीं करेगा | मरती हुई माँ को कालु वचन देता, माँ कुछ संतुष्ट होकर दम तोड़ देती है | मन ही मन राजु में खोये रहनेवाले

कालु के शुष्क व्यवहार से क्रोधित भली रूठकर मायके चली जाती है | घर में पानी भरना,चक्की चलाकर अनाज पीसना, खाना पकाना, मवेशी और खेती का सारा काम वह खुद करने लगता है | काफी महीनों तक वह यह काम करता है, उसका शरीर अब थकान महसूस करने लगता है | वह सोचता है कि राजु इतने दिन मायके में अर्थात् उसीके गाँव में थी, फिर भी मदद करने नहीं आई थी | राजु का सुख अपने नसीब में लिखा ही नहीं है | जो मिली है उसी को स्वीकार कर ले, कम-से-कम घर के काम से तो मुक्ति मिलेगी | यह सोचकर वह अपने परमा चाचा को लेकर ससुराल पहुँचता है और अपनी पत्नी भली को ले आता है |

कालु अपनी ससुराल किसी काम से जाता है तो अपनी काकीसास राजु को देखने का, बात करने का कभी मौका मिलत था | परंतु भली को जब कालु-राजु के संबंध पर आशंका होती है और वह मुँहफट औरत उससे सीधा ही पूछ लेती है तो कालु कहता है कि मैं तो तेरे मायके वालों की मदद करने जाता था, अब तू ऐसा सोचती है तो मैं अब नहीं जाऊँगा | एक बार अनाज का बीज लेने राजु को खुद आना पड़ा | भली को पश्चाताप होता है | वह राजु को कालु का भात (खाना) लेकर खेत भेजती है | वहाँ दोनों दिल खोलकर बात करते हैं, राजु खुद परोसकर खिलाती है | दूसरी और परमा मुखी का छोटा लड़का नाना फिर से राजु को अपनी पत्नी बनाने के पेंतरे आजमाता है | पर राजु बात लेकर आए लोगों और अपनी माँ तथा भाभी को स्पष्ट शब्दों में कह देती हैं कि " एकमांथी बे भव कराव्या छे तीं, ने पाछी आ त्रीजानी वात -- " [३] अर्थात् पहले कालु के साथ सगाई करवाई, फिर इसे तोड़कर दूसरी जगह विवाह करवाया और अब तीसरी जगह भेजना चाहते हो | अरे सुख ही नसीब लिखा होता तो पहली जगह क्या बुरी थी ! नाना दूसरी बार राजु को लाने में असफल रहा तो अपनी इज्जत बचाने किसी और जगह दूसरा विवाह कर लिया |

इस बार बुआई के बाद बारिश नहीं हुई | उगकर तैयार हुई फसल सूख गई | भयंकर अकाल पड़ा | किसानों के घर में भी ज्यादा अनाज तो था नहीं | किसी ने जेवर,किसी ने जानवर बेचकर तो किसी ने खेत बेचकर परिवार को जिंदा रखने का प्रयत्न किया | परंतु कुछ ही समय में आसपास के पर्वतों में बसते भील आदिवासी पहले पशु हांक ले गए और इन्हें खा गए, फिर तो गाँव लुंटने लगे | गाँव वालों को जिंदा रखने के लिए कालु राजा के कारभारी तिलकचंद की अनाज भरी गाडियाँ लुंट लेता है, इसमें इसके हाथ में गोली लगती है

| यहाँ कालु के अदम्य साहस और वीरता के दर्शन होते हैं | एक हाथ किसी काम का नहीं रहा | गाँव के गाँव लुंट ले जाने पर गाँव वाले पलायन कर थोड़ी दूर आए डेगड़िया गाँव में बस गए | छः-सात परिवार एक ही घर में रहने लगे | इसमें कालु के ससुराल वाले याने राजु का परिवार भी था | इस गाँव में इतने लोग आ गए थे कि किसी को काम नहीं मिला पाता था | ' बुभिक्षितो किं न करोति पापम् ' इस न्याय से भूख ने सब की मानवता मिटा दी थी | भगा की जवान बहिन रूखी, कालु की पत्नी आदि स्त्रियाँ तो शरीर के बदले पेट भर रही थी | पुरुष भी इसे नजरअंदाज कर जाते थे, पर कालु के लिए यह सब असह्य हो जाता था | अपने परिवार के लोग मरते हैं तो कोई दुःखी नहीं होता | ऊपर से कहते हाश वह तो इस डाकिन भूख से छूटा | पशु-पंखी और मनुष्य मरते जाते थे | सुंदरजी सेठने महाजनों से कहकर धर्मादा अनाज देना शुरू किया, वह भी आध पाशेर चावल | कालु पहले तो भीख मांगने से इन्कार कर देता है, पर राजु के समझाने पर वह लाइन में खड़ा हो जाता है | उसका आत्म-सम्मान उसे रोकता है | ये अनाज हमने ही पसीना बहाकर पैदा किया है और इसे ही हाथ फैलाकर भीख के रूप में कैसे ग्रहण करूँ ! वह राजु से कहता है - " हुंय भूखने भुंडामां भुंडी केतो तो | पण एनाथी य भुंडु आज बीजु भारयु ... भूखथी य भुंडी भीख छे | " [४] यहाँ लेखक ने यह दिखने का प्रयत्न किया है कि किसान तो धरती का पालनहार है | वह अपने शरीर को गलाकर अनाज पैदा करता है और इस को आज अपने ही अनाज के लिए हाथ फैलाना पड़े ! आज तक उसने अनाज का दान किया है | देनेवाला कैसे किसी से माँग सकता है | किसान तो सिर्फ मेघराजा से ही माँगता है क्योंकि बिना पानी खेती हो नहीं सकती | यहाँ कालु के पात्र के माध्यम से लेखक ने किसान के स्वाभिमान को जीवंत कर दिखाया है |

कालु की पत्नी भली को अपने पति की जरा-सी भी चिंता नहीं थी | राजु और कालु ने सोचा कि साथ जी तो नहीं सके पर साथ मर तो सकते हैं | इस विचार से दोनों गाँव से थोड़ी दूर वटवृक्ष के नीचे जाते हैं और भूख के मारे गिर पड़ते हैं | कालु हिंमत हार जाता है, राजु उसे साहस और आशा बंधाने की कोशिश करती है | कालु को ज़ोर से प्यास लगी थी | प्राण निकलने की तैयारी थी | राजु के मन में एक विचार आ जाता है, वह अपने स्तन कालु के मुँह में रख देती है | लेखक ने लिखा है -" राजुनां हैया दुझता हता के कालुना मोमांथी

अमी छूटता हतां ए तो भगवान जाणे ! बाकी गलाना सोस मटया ने कोठो ठंडों पड्यो एटलु तो कालु जाणतो हतो | ए आँखोंमां चेतन सल्वल्यू ने मों पर हास्य फरी वल्यु ए खुद राजुए य जोयु | " [५] अर्थात् राजु की छाती से धारा बह निकली या कालु के मुँह से ही अमृत की धारा प्रस्फुटित हो रही थी यह तो भगवान ही जाने | पर उसकी प्यास अवश्य बुझ गई थी | कालु की आँखों में चमक आ जाती है और चेहरे पर स्मित झलकने लगता है, यह खुद राजु ने देखा | राजु के सूखे स्तनों की अमीवर्षा के साथ ही निरभ्र (उजड़) आकाश में मेघ गिर आते हैं और बरसात शुरू हो जाती है | कथा यहाँ पूर्ण होती है, पर पाठक की जिज्ञासा बनी रहती है कि इसके बाद क्या हुआ | लेखक ने इसी कथा के अनुसंधान में ' भाग्याना भेरु ' और ' घम्मर वलोणु ' भाग = १-२ लिखे हैं |

इस प्रकार श्री पन्नालाल पटेल ने प्रस्तुत उपन्यास में जनपद या अंचल विशेष के किसानों विशेषत: पटेल जाति के किसानों के जीवन को रूपायित किया है | इनके सुख-दु:ख, प्रेम-ईर्ष्या, सामाजिक रीति-रिवाज, खेती संबंधित कार्य और समस्याएँ, उनकी शरीर पिघला देनेवाली मेहनत, अनेक लोगों द्वारा विभिन्न प्रकार से होनेवाला शोषण, उनके सामाजिक प्रसंग, मेले, उत्सव, विवाह सम्बन्धित गीत, अन्य प्रसंगों से जुड़े गीत और उनके द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति, ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था, अंग्रेज़ सरकार और देशी राजा की उदासीनता, अकाल की भयंकरता आदि का लेखक ने वास्तविकता के साथ संवेदनापूर्ण, जीवंत और मार्मिक चित्रण किया है | इसका कथा-विन्यास इतना सशक्त और निरूपण-शैली इतनी रोचक है कि पाठक के सम्मुख पूरा जनपद या अंचल जीवंत हो उठता है |

संदर्भ-संकेत :

१. मानवीनी भवाई, पन्नालाल पटेल, साधना प्रकाशन, अहमदाबाद, पृष्ठ-५
२. वही, पृष्ठ - ८४
३. वही, पृष्ठ - २४८
४. वही, पृष्ठ - ३८२-८३
५. वही, पृष्ठ - ३९१